नंदिसुत्तं (फोल्डर नं. ११५०)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
गंथसमप्पणं
ग्रन्थसमर्पण
प्रकाशकीय निवेदन
प्रस्तावना
विषयानुक्रम
चूर्णिकारका उपक्रम-प्रारम्भ ---------- १
१ गाथा १३ मङ्गलसूत्र-गाथा २-३ महावीरपरमात्माकी स्तुति ---------- २
२ गाथा ४-१७ सङ्घस्तुतिसूत्र-श्रीसंघकी रथ, चक्र, नगर, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मन्दरगिरिके रूपकों द्वारा स्तुति ---------- ३-६
३ गाथा १८-१९ जिनावलीसूत्र-चोवीस जिनोंको नमस्कार ---------- ६
४ गाथा २०-२१ गणधरावलीसूत्र-भगवान् महावीरके ११ गणधरोंकी स्तुति ---------- ७
५ गाथा २२-४२ स्थविरावलीसूत्र-श्रुतस्थविरोंकी स्तुति ---------- ७-१२
गा. २२ सुधर्मा, जम्बूस्वामि, प्रभवस्वामि, शय्यम्भव, गा. २३ यशोभद्र, सम्भूताय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, गा. २४ महागिरि, सुहस्ती, बहुल, गा. २५ स्वाति, श्यामार्य, शाण्डिल्य, जीवधर, गा. २६ आर्यसमुद्र, गा. २७ आर्यमङ्गु, गा. २८ आर्यनन्दिल, गा. २९ वाचक आर्यनागहस्ती, गा. ३० रेवतिनक्षत्र वाचक, गा. ३१ सिंहवाचक, गा. ३२ स्कन्दिलाचार्य, गा. ३३ हिमवन्त गा. ३४-३५ नागार्जुन वाचक, गा. ३६-३८ भूतदिन्नाचार्य, गा. ३९ लौहित्य, ४०-४१ दुष्यगणि, गा. ४२ लसामान्यरूपसे सर्व स्थविरोंकी स्तुति
६ गा. ४३ पर्षत्सूत्र-श्रुतज्ञानके-शास्त्रके अधिकारि-अनधिकारी शिष्यों की परीक्षाके लिये शैलघन, कुट, चालनी, परिपूणक,
हंस आदिके लाक्षणिक उदाहरण और ज्ञपर्षद् अज्ञपर्षद् एवं दुर्विदग्धपर्षत् ---------- १२
७. ज्ञानसूत्र-पांच ज्ञानके नाम ---------- १३
मत्यादि पांच ज्ञानकी व्युत्पत्ति, क्रम आदिका निरूपण
८ मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभाजन ---------- १४
९ प्रत्यक्षज्ञानके इन्द्रियप्रत्यक्ष नोइन्द्रियप्रत्यक्ष दो भेद ---------- १४
१० इन्द्रियप्रत्यक्षके पांच भेद ---------- १४
११ नोइन्द्रियप्रत्यक्षके तीन भेद ---------- १५
१२ अवधिप्रत्यक्षके दो भेद-क्षायोपशमिक और भवप्रत्ययिक ---------- १५
१३ क्षायोपशमिक तथा गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- १५
१४ अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ भेद ---------- १५
१५-२१ १ आगमिक अवधिज्ञानका स्वरूप, उसके अन्तगत और मध्यगत भेद तथा पुरतो अन्तगत, मागतो अन्तगत, पार्श्वतो अन्तगतादि प्रभेदों का स्वरूप, उन में प्रतिविशेष आदिका निरूपण ---------- १६
२२ २ अनानुगामिक अवधिज्ञान ---------- १७
२३ ३ वर्धमानक अवधिज्ञान, गाथा ४४-४५ अवधिज्ञानका जघन्य और उत्कृष्ट अवधिक्षेत्र. गा. ४६-४९ द्रव्य-क्षेत्र-काल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावकी अपेक्षासे अवधिज्ञानकी वृद्धिका स्वरूप गा. ५० द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावका पारस्परिक वृद्धिका स्वरूप गा. ५१
क्षेत्र-कालकी सूक्ष्मताका निरूपण ---------- १७-१८
२४ ४ हीयमान अवधिज्ञान ---------- १९
२५ ५ प्रतिपाताति अवधिज्ञान ---------- १९
२६ ६ अप्रतिपाति अवधिज्ञान ---------- १९
२७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- १९
२८ गा. ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार ---------- २०
२९ मनःपर्यवज्ञानका अधिकारी ---------- २०
३० मनःपयवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो भेद ---------- २२
३१-३२ – द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री ऋजुमतिविपुलमतिमनःपर्यवज्ञानका स्वरूप और गा. ५३ मनःपर्यवज्ञानका
उपसंहार ---------- २३
चूर्णिमें-अष्ट रुचकप्रदेश और उपरिम-अधस्तन क्षुल्लकप्रतरका स्वरूप ---------- २४
३३ केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद ---------- २५
३४-३६ भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप ---------- २५
३७ सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परस्परसिद्ध दो भेद ---------- २६
३८ अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पंद्रह भेद ---------- २६
चूर्णिमें-पंद्रह भेदोंका विस्तृत स्वरूप ---------- २६
३९ परम्परसिद्धकेवलज्ञान ---------- २७
४० द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप ---------- २८
चूर्णिमें-केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-कमोपयोगवादकी चर्चा ------- २८-३०
४१ गा. ५४-५५ केवलज्ञानका उपसंहार ---------- ३०
४२ परोक्षज्ञानके आभिनिवोधिक श्रुतज्ञान के भेद ---------- ३१
४३ आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सदैव सहभाविता ---------- ३१
चूर्णिमें-मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका पृथक्करण
४४ मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान ---------- ३२
४५ आभिनिबोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्रित अश्रुतनिश्रित दो भेद ---------- ३२
४६ अश्रुतनिश्रित आभिनियोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण ---------- ३३
गा. ५६ अश्रुतनिश्रित आभिनिबोधिकके औत्पत्तिकी आदि चार भेद गा. ५७-६० औत्पत्तिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण गा. ६१-६३ वैनयिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६४-६५ कर्मजा मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६६-६९ पारिणामिक मतिका स्वरूप और उदाहरण
४७ श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद ---------- ३४
४८ अवग्रहके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद ---------- ३४
४९ व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप ---------- ३५
५० अर्थावग्रहके भेद और एकार्थिक शब्द ---------- ३५
५१ इहाके भेद और एकार्थिक शब्द ---------- ३६
५२ अपायके भेद और एकार्थिक शब्द ---------- ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३ धारणाके भेद और एकार्थिक शब्द---------- ३७
५४, ५६ २८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यञ्जनावग्रहका प्रतिबोधक और मल्लक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपांतरूपण ---------- ३७-३९
५७ द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप ---------- ४२
५८ गा. ७०-७५ आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, शब्दश्रवणका स्वरूप, एकार्थिक शब्द और उपसंहार---------- ४३
५९ श्रुतज्ञानके चौदह भेद ---------- ४४
६०-६३ १ अक्षरश्रुतके संज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर और लब्ध्यक्षर, तीन भेद और स्वरूप---------- ४४
६४ २ गा. ७६ अनक्षरश्रुत---------- ४५
६५-६८ ३ संज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतूपदेश और दृष्टिवादोपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और ४ असंज्ञिश्रुत ---------- ४५-४७
चूर्णिमें-ईहा, अपोह, मार्गणा, गवेषणा, चिन्ता, विमर्श इन शब्दोंके अर्थका स्पष्टीकरण
६९ ५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाङ्गीके नाम---------- ४८
७० ६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हंभी मासुरुक्ख आदि प्राचीन अनेक जैनेतर शास्त्रोंके नाम और सम्यक्श्रुत-
मिथ्याश्रुतका तात्त्विक विवेक---------- ४९-५०
७१-७३ ७-८ सादि-अनादि ९-१० सपर्यवसित अपयवसित श्रुतज्ञान, और उनका द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप ---------- ५१
७४-७५ पर्यवाग्राक्षरका निरूपण और अतिगाढकर्मावृत दशामें भी जीवको अक्षरके अनन्तमें भाग जितने ज्ञानका
शाश्वतिक सद्भाव ---------- ५२
चूर्णिमें-अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण---------- ५२-५६
७६ ११-१२ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान---------- ५६
७७ १३-१४ अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्यश्रुत---------- ५६
७८ अङ्गबाह्यश्रुतके आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त दो प्रकार---------- ५७
७९ आवश्यकश्रुत---------- ५७
८० आवश्यकश्रुतके कालिक और उत्कालिक दो प्रकार---------- ५७
८१ उत्कालिकश्रुत के २९ नाम---------- ५७
चूर्णिमें-२९ उत्कालिकश्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण
८२ कालिकश्रुतके २९ नाम---------- ५८
चूर्णिमें-कालिक श्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण । टिप्पणीमें नामोंकी कमीबेशीका निर्देश
८३ आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुतका उपसंहार---------- ६०
८४ अङ्गप्रविष्टश्रुतके १२ नाम ---------- ६१
८५ १ आचाराङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६१
८६ २ सूत्रकृताङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ६२
८७ ३ स्थानाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६३
८८ ४ समवायाङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ६४
८९ ५ विवाहप्रज्ञप्तिअङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९० ६ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६५
९१ ७ उपासकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६६
९२ ८ अन्तकृद्दशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६७
९३ ९ अनुत्तरौपपातिकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६८
९४ १० प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ६९
९५ ११ विपाकसूत्रके दुःखविपाक सुखविपाक दो प्रकार, उनका वर्णन और स्वरूप ---------- ७०
९६ १२ दृष्टिवाद अंगके पांच भेद ---------- ७१
९७-१०५ परिकर्मदृष्टिवाद के सात प्रकार और इनके भेद ---------- ७१
१०६ सूत्रदृष्टिवादके २२ प्रकार ---------- ७३
१०७ पूर्वगतदृष्टिवाद-चौदह पूर्व ---------- ७४
१०८-११० अनुयोगदृष्टिवादके मूलप्रथमानुयोग और गंडिकानुयोग दो प्रकार तथा इनका स्वरूप---- ७६
चूर्णिमें-सिद्धगण्डिकाका वर्णन---------- ७७
१११ चूलिका दृष्टिवाद---------- ७९
११२-११३ दृष्टिवादका परिणाम और विषय ---------- ८०
११४ द्वादशाङ्गीके विराधकोंको हानि ---------- ८०
११५ द्वादशाङ्गीके आराधकरोंको लाभ---------- ८१
११६ द्वादशाङ्गीकी शाश्वतिकता ---------- ८१
११७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री श्रुतज्ञानका स्वरूप---------- ८२
११८ गा. ८१ श्रुतज्ञानके चौदहभेद, गा. ८२ श्रुतज्ञानका लाभ, गा. ८३ बुद्धिके आठ गुण, गा. ८२
सूत्रार्थश्रवणविधि, गा. ८५ सूत्रव्याख्यानविधि और उपसंहार-नन्दीसूत्रकी समाप्ति ---------- ८३

परिशिष्टम्

प्रथम परिशिष्ट-नन्दीसूत्रगत गाथाओंका अकारादिक्रम ---------- ८५
द्वितीय परिशिष्ट-नन्दीचूर्णिगत उद्धरणोंका अकारादिक्रम---------- ८७
तृतीय परिशिष्ट-नन्दीचूर्णीगत पाठान्तर और मतान्तरोंका निर्देश---------- ८८
चतुर्थ परिशिष्ट-नन्दीसूत्र और चूर्णिगत ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर आदि के विशेषनामोंका अकारादिक्रम ---------- ८९
पञ्चम परिशिष्ट-नन्दीसूत्र और चूर्णिगत विषयविभाग और व्युत्पत्तिदर्शक शब्दोंका अकारादिक्रम- ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org